अध्याय पहला

कवि नागार्जुन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय पहला

कवि नागार्जुन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

उद्घोष :-

आधुनिक हिंदी काव्यधारा के प्रगतिवादी काव्य के उन्नायक और सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधित्व करनेवाले कवियों में कविवर नागार्जुन का अपना एक विशिष्ट स्थान है। नागार्जुन बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यका हैं। सादगी, सरलता और खुलापन नागार्जुन के व्यक्तित्व की मूलभूत विशेषताएँ हैं। जीवन के कठोर संघर्षों में तपकर उनका व्यक्तित्व कुंदन की भाँति निखरा है। दुःख और किसी को माँजता हो या न माँजता हो, नागार्जुन के व्यक्तित्व को उसने पूरी तरह माँजकर चमकाया है। ऐसा न होता तो सचमुच चोली और तिलक धारण करनेवाला ये मैथिल ब्राह्मण कहीं वैदिक कर्मकांड करवा रहा होता, मैथिली और हिन्दी भाषा के शीर्षस्थ रचनाकारों के बीच न बैठा होता।

कवि नागार्जुन का काव्य भोगा हुआ यथार्थ है। उनमें अनुभूति की प्रमाणिकता है। वे विविध आंदोलनों के सहकर्मी रहें हैं और अभावों में जिये हैं। यही कारण है कि वे हमारे देश के मजदूर-किसानों का सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करते है। उनकी रचनाएँ तत्कालीन समाज लोक जीवन और विविध आंदोलनों का ऐतिहासिक दस्तावेज बन गई है। वे देश के हालातों का प्रतिबिंब है। प्रेमचंद के बाद शायद कवि नागार्जुन ही ऐसे है जिनकी खंड-खंड कविताओं में भी समकालीन भारतीय समाज और संस्कृति का सिलेसिलेवावर इतिहास मिल सकता है। नागार्जुन जनकवि है और कलाकार की प्रतिबध्दता के पक्षधर हैं। कलाकार में समसामायिकता का आग्रह उनकी दृष्टि में बहुत जरूरी है।

कवि नागार्जुन की कविताांओ के लोकचित्र में सामूहिक संवेगों वाली प्रतिक्रिया होती है। उसमें जो तात्कालिकता और जीवंतता, सादगी और स्पष्टता, तेजी और तलखी, मोहभ्रम और मोहभंग, चुनोती और व्यथा, व्यंग्य और फूहडता होती है। वह सब नागार्जुन ने सर्वाधिक भोगी है, और उन्हे अपनी कविता में अभिव्यक्त किया है। नागार्जुन की रचनाांओ को प्रमुखतः चार श्रेणियों में देख सकते है। पहली श्रेणी में सामाजिक यथार्थ की हू-ब-हू तसवीर खींचनेवाली रचनाएँ हैं। जिनमें उनकी व्यंग्यपरक दृष्टि भी शामिल है। तो दूसरी श्रेणी में राष्ट्रीय, आंतर्राष्ट्रीय रचनाएँ हैं, जो मानवतावादी चेतना को लेकर चलती हैं। तीसरी श्रेणी में उन्मुक्त, उल्लासित प्रकृति चित्र एवं प्रणयपरक रचनाएँ हैं, जिनमें प्रगतिशील नारी भावना भी संम्मिलित हैं। चौथी श्रेणी में उनके आख्यानक काव्य आते हैं, जिनमें पौराणिक ऐतिहासिक आधार-भूमि के रहते हुए भी आधुनिक सामाजिक कृति के रूप में समझा जा सकता हैं। इस प्रकार नागार्जुन की कविताएँ पूरा युग-बोध लेकर आयी है।

कवि नागार्जुन व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में लिखते समय उनका जीवनवृत्त भी आवश्यक है। उनके व्यक्तित्त्व के दो पहलू है - एक बाह्यपक्ष और दुसरा आंतरिक पक्ष। उनका कृतित्त्व भी बहुमूखी है। हम इस अध्याय में इन्हीं सब बातोंपर प्रकाश डालेंगे।

जीवनवृत्त :-

त्यागपर आधृत होकर भारतीय संस्कृति से प्रभावित हमारे देश की महान विभूतियोंने तथा मनिषियोंने "स्व" की अपेक्षा पर को श्रेष्ठता दी है। अपने प्रति उदासीन रहकर, जन हित की लगन से साहित्य तथा समाज की सेवा में निमग्न रहे है। इसी उदात्त परंपरा का अनुसरण करनेवाले नागार्जुन ने भी अपने जीवन की घटनाांओ का विवरण अथवा आत्मकथा लिखने की कतिपय आवश्यकता नहीं समझी है। हिन्दी साहित्य में नागार्जुन मैथिली में "यात्री" मित्र परिवार तथा राजनीतीक कार्यकर्ताओं के द्वारा "नागबाबा" और संस्कृत में चाणक्य जैसे

आदरसुचक नामसे पहचाने जाते है। लेकिन उनका सही नाम "वैद्यनाथ मिश्र" ही है।

"पैदा हुआ था मैं -
दीन-हीन-अपाठ्ति. किसी कृषक कुल में
आ रहा हूँ। पीता अभाव का आसव ठेठ बचपन से
कवि? मैं रूपक हूँ दबी हुई दूब का
हरा हुआ नहीं की चरने को दौडते।
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में।।"[1]

जन्म तथा बचपन :-

हिन्दी और मैथिली साहित्य के विशिष्ट ही नहीं शीर्षस्थ रचनाकार तथा अपढ़ तथा सर्वहारा परिवार के लाखों-करोडो बच्चो की तरह नागार्जुन की जन्मतिथि के बारे में कोई लिखीत प्रमाण नहीं मिलता। कारण बचपन में ही माँ का छत्र उठ जाना और पिताजी की लापरवाही तथा जीवन के प्रति उदासीन वृत्ति। फिर भी जून 1911 की जेष्ठ मास की पूर्णिमा की नागार्जुन की जन्म-तिथि मानी जाती है। स्वयं नागार्जुन भी सन 1911 को ही अपना जन्म मानते है। वे माता पिता की पांचवी संतान थे, लेकिन उनकी चार भाई-बहनों का देहांत बचपन में ही हो गया था। इस बच्चे के जीवित रहने के संदर्भ में भी चिंता होने के कारण ही शायद नागार्जुन की जन्म-कुंडली तैयार करना माता-पिता को अशुभ लगी होगी।

नागार्जुन के जन्म के पहले कई दिन पिता श्री गोकुलमिश्र ने वैद्यनाथ धाम जिला संथाल परग्ना में जाकर दीर्घजीवी पुत्र प्राप्ती के लिए एक महीना व्रत किया था। इसी अनुष्ठान के फलस्वरूप पुत्र प्राप्ति मानकर नाम रखा "वैद्यनाथ"। देहाती लोगों की अंध:श्रध्दा थी कि अच्छा नाम अशुभ होगा इसिलिए कोई उबाड़-खाबाड़ नाम ही ठीक रहेगा। अतः नाम रखा गया "ठक्कन"। धारण यह थी

कि यह लडका अन्य भाईयों की तरह चार दिनों के बाद अपने माँ-बाप को ठगकर चला जाएगा। लेकिन सही रूप में नागार्जुन माता-पिता को न ठगकर ऐसा माननेवालों की ही ठगाते हुए अपने जीवन के आठ दशक अबाध रूप में पूरे कर गये है। नागार्जुन का जन्मस्थान ननिहाल सतलखा नाम से है, जो बिहार मे मधुबने जिले में आता है। उनका मुल पैतृकवास स्थान ग्राम तरौनी है, जो दरभंगा (बिहार) जिले में पडता है। प्रथा के अनुरूप पिता के गांव तरौनी को ही जन्म-स्थान माना जाता है।

माता-पिता :-

आपका जन्म सनातन धर्मी अशिक्षीत संस्कारहीन दरिद्र एवं गरीब मैथिली ब्राह्मण कुटुंब में हुआ। उनका गोत्र "वस्त" है और कुल की शाखा "पलिबाड समोल" थी। नागार्जुन के प्रपितामह का नाम परसमणि मिश्र पितामह का छत्रमणि मिश्र और पिता का नाम गोकुल मिश्र था। पिताजी गोकुल मिश्र लापरवाह, घुमक्कड, भंगेडी, रूढिवादी कठोर वृत्ति के दरिद्र व्यक्ति थे। उन्होंने कभी पसीना बहाकर खेती-बाडी नहीं की। पिताजी की धमकियों, दंभ तथा माँ के प्रति बेरहमी के कारण नागार्जुन के हृदय को बचपन मे ही बडी ठेस पहुँची थी। परिणामतः उनके दिल में अपने पिता के लिए श्रध्दा का भाव कम था। इसीकारण तेरह वर्ष की आयु से ही घर-परिवार के प्रति उदास हो गए। कृष्णा सोबती को दिए एक साक्षात्कार में नागार्जुन ने अपनी विरक्ति का कारण बताया है - "पिता रतिनाथ की चाची पर आसक्त थे। रूप की पिता को इतनी ललक थी कि वे विधवा चाची को न छोड सके। यह घटना मेरी विरक्ति का मूल कारण थी। मौका लगते ही घर से भाग निकला।"[2] नागार्जुन की माँ उमादेवी ईमानदार, परिश्रमी, दृढचरित्र एवं ममत्वभरी सीधे-सीधे ढंग की ग्रामीण महिला थी। नागार्जुन जब चार वर्ष के थे तब माताजी का स्वर्गवास हो गया।

शिक्षा :-

पिताजी की यायावरी तथा भंगेडी वृत्ति के कारण अर्थाभाव परिवार की समस्या थीं। बालक को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाने की विविशता होने से संस्कृत की शिक्षा देना ही पिताजी का मानस था। साथ ही होशियार ब्राह्मण पुत्रों को पढ़ाई के लिए पूरी छात्रवृत्ति देनेवाले लोग भी मिथिला में काफी थें। नागार्जुन के गाँव में संस्कृत अध्ययन की परंपरा भी उस समय थी। पिताजी कहते थे कि "सेंत-मेंर में लडका पढकर तैयार हो जाएगा, अपनी तो एक कौडी नहीं लगेगी। उल्टे पढ़ाई के दिनों में भी चाहेगा तो हमारी मदद करता रहेगा।" अतः तरौनी के संस्कृत पाठशाला मे प्राचीन पध्दति से शिक्षा का प्रारंभ किया। बाद में किसी अंग्रेजी स्कूल, कालिज या युनिवर्सिटी का मुंह नहीं देख। तेरह वर्ष की उम्र के आसपास प्रथमा की परीक्षा देकर गांव के ही पंडित अनिरूध्द मिश्र से संस्कृत के कुछ छंदों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। बाद में "गनौली" के संस्कृत विद्यालय में "व्याकरण मध्यमा" पूरी की। फिर एक ससाल पछ़गछ़िया (सहरसा) में और बाद में चार साल काशी, कलकत्ता में साहित्यशास्त्राचार्य की परीक्षा पास की। सन् 1930 में वाराणसी आकर जैन मुनियों के संपर्क मे पालि और प्राकृत भाषा का गहराई से अध्ययन किया। यही ज्ञान आगे चलकर लंका प्रवास में काफी उपयोग प्रतित हुआ। कोलंबो के केलानिया में "विद्यालंकर परिवेण" नामक विद्यापीठ में पालीभाषा द्वारा बौध्द धर्म दर्शन और साहित्य का अध्ययन किया। साथ ही बौध्द संन्यासियों को संस्कृत के माध्यम से व्याकरण एवं दर्शन का अध्यापन किया। केलानिया में ही उनको अंग्रेजी का भी कामचलाऊ ज्ञान प्रात करना पडा।

पिता गोकुलनाथ मिश्र कम पढ़े-लिखे एवं दरिद्री होने से उन्होंने बेटे को निम्न लोगो के साथ हँसने बोलने या खेलने-मिलने को कभी मनाई नहीं की। बालक नागार्जुन के दिल में निम्नवर्ग तथा किसानों के प्रति आकर्षण का बीजवपन बचपन में ही हो गया, जो उनके भावी साहित्य की आधारशिला बन

गई है। उन्होंने अपने बचपन में जो आपत्तियाँ झेली, सामाजिक विषमता और भेदभाव को देखा-परखा-भोगा इनका ही सम्मिलित प्रभाव उनके व्यक्तित्त्व में परिलक्षित होता है। वैसे तो शिक्षा और व्यक्तित्त्व का संस्करण जीवन के विस्तृत अनुभव की पाठशाला में ही हो गया। "इसलिए तो गरीबी, कुसंस्कार और रूढीग्रस्त पंडिताऊ परिवेश नागार्जुन को लील नही पाए नहीं तो वे वही चुटन्ना और जनेऊ वाले पंडित होते और न पुरानी परिधि से बाहर निकलते..... न इस तरह का युग का साथ दे पाते।"[3]

वाराणसी में पढाई करते वक्त नागार्जुन ने अपने प्रथम काव्य गुरू श्री अनिरूध्द मिश्र से प्रभावित होकर काव्यलेखन का प्रारंभ किया। वहीपर कविरत्न सीताराम झा से पहचान होने के कारण अलंकार, भाषा, छंद आदी का गहरा ज्ञान प्राप्त हो गया। यही रहकर उन्होंने बोध्द धर्म के समतावाले सिध्दांत का भी ज्ञान प्राप्त किया।

विवाह तथा ग्राहस्थ जीवन :-

शिक्षा-दीक्षा के बाद उन्नीस वर्ष की उम्र में सन 1931 में नागार्जुन का विवाह अपराजिता देवी के साथ हुआ और गौना सन 1934 में हुआ। वे पत्नी को प्यार से "अपू" कहकर पुकारते थे कि - "क्या बात कहती हो अपू तुम तो मेरी सहधर्मिणी हो ठेठ सनातन अर्धांगिनी श्रीमती अपराजिता देवी। हमारी अपनी देहाती जायदाद और घर-आंगन की मालकीन।"[4] पत्नी के प्रति हमेशा दिल में सहानुभूति और करूणा होते हुए भी अपनी घुमक्कड प्रवृत्ति के कारण उन्हे उचित स्नेह नहीं दे सके। वे घर में लगातार तीन-चार महिने से अधिक काल नही टिकते थे, अतः गृहस्थी का भार संभालने में पत्नी को हाथ नहीं दे सके। उनके संबंधी मिश्र कुटुंम्बिय और ग्रामीण लोग तो उन्हें कुटूंब-कबिलावाला न मानकर संन्यासी ही मानते है। नागार्जुन को शोभाकांत, सुकांत, श्रीकांत और श्यामकांत नाम के चार पुत्र और उर्मिला तथा अंजू नामक दो पुत्रियाँ है। पिताजी की उपेक्षा

और अर्थाभाव के कारण बच्चे उचित तथा उच्च शिक्षा नहीं पा सके है। नागार्जुन का अपने देहात में छोटासा मकान और थोडी-सी खेती है। जिसमें पिताजी और उन्होंने कोई भी विस्तार या परिवर्तन नहीं किया है। जमीन की थोडीसी उपज और प्रकाशक से मिलनेवाली थोडी "रायल्टी" ही उनकी जीविका रही है। आमदानी का प्रमुख साधन कलम-घिसाई होने से घर में हमेशा "लुट लाओ और कुट खाओ" ही हालत बनी रही है। संप्रत गाव का खपरैल का घर भी मरम्मत के अभाव में खंडहर बन गया है। जमीन की सीमा-सरहद्द भी पडोसियों द्वारा नोंची गयी है। अन्न, वस्त्र और निवास के कष्ट में परिवार के दिन बीत गए है।

घुमक्कडवृत्ति :-

नागार्जुन सन 1934 में घर छोडकर भारत के विभिन्न प्रांतो याने पंजाब, हिमालचप्रदेश, राजस्थान, काठियवाड आदि प्रदेशों में घुमते रहे। इस यात्रा में देहाती लोगों के घनिष्ठ संपर्क में आने से निम्नवर्गो की हालात का सूक्ष्मअवलोकन किया। उन्होंने देखा की किसान, जमींदारो के शोषन का शिकार बन गया है। गरिबो से जोर-जुलूम से सेवा ली जाती है। उनका जीवन ही अमीरों कृपा पर आश्रित है। भ्रष्टाचार, मजबूरी और रूढिवाद के कारण समाज का व्यापक हिस्सा कुंठा और घुटन से भरा है। इस विदारक कटू सत्य ने ही नागार्जुन को भविष्य में शक्तिशाली व्यंग्यकार बना दिया है। इस भटकंती में नागार्जुन 1936 के अंत में सिंहलदिप (लंका) जा पहुँचे। वहाँ बौध्द धर्म की दीक्षा लेकर चीवर परिधानकर बौध्द भिक्खु बने। लंका निवास में वहाँ भी "समसमाजपार्टी" के क्रांतीकारी सेना के संपर्क में आने से साम्यवाद और समाजवाद से परिचित होकर उनका दयालु मन वामपंथ की ओर झुक गया। लंका से ही भारतीय किसान आंदोलन के नेता स्वामी सहजानंद से पत्रव्यवहार द्वारा घनिष्ट संपर्क में आ गए।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की प्रेरणा से बिहार सरकार ने सन 1938 में नागार्जुन को अनुसंधान कार्य के लिए तिब्बत मे जानेवाले मंडल में प्रतिनिधि के रूपमें लाहसास भेजने का निर्णय लिया। राहुलजी की आज्ञा और आशीर्वाद से

हिंदुस्तान लौट आए और तिब्बत को यात्रा के लिए चल पडे। लेकिन दुर्भाग्य से रास्ते में हो घोडे से पड़कर जख्मी हो गए अतः यात्रा का मनोरथ अधुरा छोडकर नाराज होकर वापस वाराणसी आए। वाराणसी आते ही राजनितिक आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर राजनीतिक जीवन का श्रीगणेशा किया। स्वामीजी ने कहा कि, "अतीत के बील में घुसे बैठे हो, वर्तमान संघर्ष के खुले मैदान में आओ। उनके संपर्क में आकर नागार्जुन को और बल मिला। नागार्जुन को राजनीतिक की प्रारंभिक दीक्षा स्वामी सहजानंद से मिली थी।"[4] बिहार मे उस वक्त किसान आंदोलन का नेतृत्व करनेवाले राहुलजी को अँग्रेज सरकारने गिरफतार करने से आंदोलन का नेतृत्व नागार्जुन ने संभाला। फलतः उन्हें भी गिरफतार कर दस महिने के कारावास की सजा होने से छपरा तथा हजारीबाग जेल में भेज दिया। जेल से रिहाई के बाद स्वामी सहजानंद सरस्वती के साथ किसान यात्रा का कार्य करना स्वीकृत किया। उनका नेताजी सुभाषचंद बोस के साथ भी पत्रोद्वारा संपर्क रहा था। उन्होंने जयप्रकाश नारायण द्वारा आयोजित "समर स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स" में भी भाग लिया था।

समाजसेवा :-

सन 1940 में किसान आंदोलन का नेतृत्व करना और फारवर्ड ब्लाक द्वारा युध्द विरोधी गुप्त रूपमें परिपत्र छपवाने के इलजाम में आठ मास की सजा होने से भागलपूर जेल में भेज दिए गए। किसान आंदोलन के संदर्भ में स्वयंसेवकों के शिबीर आयोजित करना, प्रचार साहित्य की तैयारी, कार्यकर्ता के रोजी-रोटी की व्यवस्था करना, संघर्ष की दिशा तय करना आदि काम नागार्जुन ने भिक्खु होकर भी सफलता से किए। जेल में किसान सभा के नेता पंडित कार्यानंद शर्मा और समाजवादी नेता पंडित श्यामनंदन मिश्र के साथ घनिष्ट पहचान होने से साम्यवादी एवं समाजवादी विचारधारा से परिचित हो गये। भागलपुर जेल में सजा काट रहे थे तो उनके पिता मिलने आए। पिताजी ने जेलर को रोते-रोते कहा था - "यह लडका वर्षो से भागा हुआ है। बुढापे में हमे तो सता ही रहा है, पर एक "बछिया" की पीठ में छुआ छोप कर बाबाजी बना घुमता

है। इस कमाई को जब आप जेल से रिहा करनेवाले हो तब तार देकर मुझे बुलवा ले। हम चार जने मिलकर आयेंगे और इसक पकड़कर घर ले जायेंगे।"[6]

1941 में जेल से छुटने के बाद पिताजी के आग्रह से, माथे में मार्क्स वादी विचारों का तुफान और दिल में सर्वहारा वर्ग के प्रति हमदर्दी लेकर गाँव आ गए। जेल से छुटकर नागार्जुन ने अपना चीवर और कमण्डल सीताराम आश्रम के हवाले किया जो आज भी वहाँ सुरक्षित रखा है। ससुरालवालों ने उनका स्वागत किया और घर से बाहर जाने की आज्ञा न देकर सदा साथ रहने लगे। उधर खुफिया पुलिस भी उनपर लगी रहती। लेकिन सन्यासी नागार्जुन का लंका की समुद्र यात्रा से गृहस्थाश्रम लौटना, तरौनी के अंधविश्वासी परंपरावादी पंडितों को बर्दाश्त नहीं हो सका। उनका कहना था कि - "एक तो संन्यास से वापस आया और दुसरा समुद्र पार गया, तिसरी बात की बौध्दधर्म मे दीक्षित हुआ। बौध्द तो आधा मुसलमान होता है आधा इसाई। वे गाय भी खाते है और सुअर भी। यह लडका ब्राहमणों के समाज में फिरसे वापस लिया ही नहीं जा सकता।"[7] लेकिन उनके वापसी का युवकोंने जोरदार समर्थन किया। युवकों के प्रति यही विश्वास नागार्जुन की रचनाओं में चेतना का आधार बन गया है।

वापसी :-

घर वापस आनें से पिता को आनंद के साथ दुःख भी हो गया था, कारण वे सोचते थे कि जेल होकर आया है, तो कही नोकरी नहीं मिलेगी। उदरनिर्वाह के प्रश्न को हल करने के लिए नागार्जुनने मैथिली के कविताएँ लिख-छपवाकर रेल यात्रियों को घुम-घुमकर बेचना शुरू किया। बिहार में नौकरी मिलना मुश्किल है। यह जानकर पत्नी को साथ लेकर पंजाब में लुधियाना आ गये। वहाँ जैन मुनि उपाध्याय आत्मारामजी ने अपने साहित्यिक काम-काज के लिए नियुक्त कर लिया। स्वतंत्र प्रकृति और घुमने की आदत होने से वेतन के लिए बंधन में रहना मुश्किल हो गया था। इसी वर्ष सन 1943 में पिता का स्वर्गवास होने

से छः मास ही घर लौ आए। जमीन की अल्प उपज और अनुवाद से जो थोडा धन मिलता था, उससे परिवार का निर्वाह करना कठिन होने से इलाहाबाद में आकर हिंदी और मैथिली में लिखना प्रारंभ किया। साथ ही शरतचंद्र और के·एम·मुन्शी की कृतियों का अनुवाद भी किया। उन्होंने सन 1946 में मैथिली में "पारो" उपन्यास लिखकर औपन्यासिक क्षेत्र में प्रवेश किया।

साहित्यसेवा :-

नागार्जुन परिवार का भार पत्नी अपराजिता देवी पर सौंपकर स्वयं दिल्ली, पटना, कलकत्ता और इलाहबाद घुमते हुए साहित्य सेवा में रहें। सन 1948 में गांधीजी की हत्या से आहत होकर "शपथ" कविता लिखने से उन्हें कारावास जाना पडा। कविता भी सरकारदारा जप्त की गयी। सन 1949 वर्धा आकर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के कार्य में लगे। सन 1952-53 में इलाहबाद में "यात्री" नामक प्रकाशन शुरू किया, और "युगधरा" काव्य का प्रकाशन किया। इस प्रकाशन को कलकत्ता ले जाकर "सतरंगे पंखोवाली" काव्य का प्रकाशन किया। साम्यवाद के प्रबल समर्थक नागार्जुन ने सन 1962 के चीनी आक्रमण से क्षुब्ध होकर चीनी नेतांओ की कडी नींदा की। उनके मैथिली काव्य संकलन "पत्रहीन नग्न गाछ" पर सन 1969 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। तिब्बत यात्रा में असफल रहे कवि नागार्जुन सन 1971 में रूस यात्रा कर आये है। सन 1975 में जननायक जयप्रकाशजी के नेतृत्व में संचलीत "संपूर्ण क्रांती" आंदोलन मे समर्थन में नुक्कडोंपर काव्यपाठ करने के कारण तत्कालीन कॉंग्रेस सरकार दारा गिरफतार करने से नागार्जुन को 5 जून 1975 से 18 अप्रैल 1976 तक कारावास में रहना पडा।

साम्प्रति उनका जन संपर्क इतना है कि राजकीय क्षेत्र का कोई भी पद हासिल कर सकते थे। लेकिन सर्वहारा का हित चाहनेवाले इस संवेदनशील मनिषी को आज की राजनीति से नफरत हो गयी है। लेखन-जीवी होने से जो कुछ, मिलता है, उसे लेकर अपनी मौलिक रचनाएँ प्रकाशक के हाथ सोपते है।

छल प्रपंच की कूट राजनीति से परे साहित्यिक दल बन्दियों से कोसो दूर रहकर अपना साहित्य संसार समृध्द कर रहे हैं।

निष्कर्ष :-

बहुआयामी व्यक्तित्त्व के धनी नागार्जुन संस्कृत, पाली, प्राकृत, मैथिली और हिन्दी भाषा कें ज्ञानी तथा बहुभाषिक रचनाकार है। उनके जीवन और विचारोंपर समयानुरूप वामपंथी, साम्यवाद, समाजवाद का प्रभाव दिखाई देता है। भारतीय संस्कृती और प्रकृति के प्रति स्वाभिमानी इस धरतीपुत्र पर अंग्रेजी भाषा साहित्य एवं संस्कृति का कोई प्रभाव नहीं है। स्वयं अभावी का आसव पान करने के कारण उनके दिल में किसान मजदूरों के प्रति आत्मप्रेरित तथा स्वानुभवजन्य सहानुभूति है। जीवन प्रवाह में अनेक समस्याओं तथा विकलताओं के साथ संघर्ष करते हुए अपने मंजिल की ओर अग्रेसर रहनेवाले जिजीविषु नागार्जुन सन्यस्त वृत्ति के अवधूत ही है।

नागार्जुन : व्यक्तित्व :-

"व्यक्तित्व" शब्द हिन्दी साहित्य में अंग्रेजी के "पर्सनेलिटी" शब्द का पर्यायवाची माना गया है। लैटिन भाष के "पर्सोना" शब्द से "पर्सनेलिटी" की उत्पत्ति मानी जाती है। पर्सोना शब्द का प्रयोग मुलतः नाटक में पत्रोद्वारा धारण किये नकली चेहरों के लिए होता था। व्यक्तित्व का तात्पर्य व्यक्ति का बाहयाकार एवं अंतर्मन की वृत्तियों से है। जिसमें व्यक्ति का सोचना, लिखना, जीवन यापन का तरीका रहन-सहन मनोवृत्तियों तथा आदतें संस्कार शारीरिक ढाँचा और वेशभूषा आदि व्यक्ति के गुणों का समावेश होता है। व्यक्तित्व के बारे में बाबूराम गुप्त की राय है कि - "व्यक्तित्व एक ऐसा विशिष्ट ढाँचा होता है, जो एक व्यक्ति को किसी भी अन्य व्यक्तियों से अलग करता है। व्यक्तित्व शारीरीक एवं मानसिक प्रवृत्तियों का समुच्चय है।"[8] हमारी राय से व्यक्तित्व वह एकाई है, जिसके द्वारा एखाद व्यक्तिका परिचय किया जाता है तथा व्यक्ति को पहचाना जाता है। व्यक्ति का समग्र परिचय होने के लिए उसके व्यक्तित्व को बाहय और आंतरिक रूपों में विभाजित करना उचित एवं आवश्यक लगता है। यहाँ हम नागार्जुन के व्यक्तित्व का परिचय भी बाहय और आंतरिक रूपों में करना ठिक समझते है।

नागार्जुन का व्यक्तित्व : बाहय पक्ष :-

व्यक्तित्व के इस पक्ष में व्यक्ति की शारीरीक बनावट रूप-रंग, वेशभूषा, रहनसहन, खानपान, व्यवसाय तथा स्वास्थ आदि बातों को लिया जाता है।

नागार्जुन का व्यक्तित्व सीधा-साधा होने से उनका रहनसहन बहुत साधारण था। गरीब ब्राहमणपरिवार में अभावग्रस्तता का निम्न-मध्यमवर्गीय जीवन बितानेवाले नागार्जुन शरीर से दुबले-पतले हैं। मोटे खद्दर का कुर्ता, पाजामा मझोला कद, आँखों पर ऐनक, पैरों मे चप्पलें और चेहरे पर सदा उत्साह -यह साधारण रूप हमेशा दिखाई देता है। अपने पुत्र शोभाकांत को उन्होंने एक बार

कहा था - "कभी भी अपनी तुलना उपरी वर्ग से मत करो···· नीचे देखो तब समझ आएगा कि जीवन क्या है। तुम से उपरवालों की संख्या सीमित है और नीचे वाले की गिनती नहीं कर पाओंगे।···· ऊपर देखने से असंतोष बढेगा···· नीचे देखने से जीने के लिए राह खोजने में मद्द मिलेगी। तुम्हें तो किसी तरह दोनों समय रूखा-सुखा खाना मिलता है। अपने आसपास देखों कितने ऐसे लोग है, जिन्हें दो-दो दिनों तक अन्न देखने तक को नही मिलता है।"[9] इस संसार में जो सब से अधिक पीडित और प्रताडित है, दु:ख और दर्द से आक्रांत है, उनका पक्षधर होने से ही शायद उन्हें सादगी में स्वाभिमान लगता है। अतः उन्होंने श्रमिक वर्ग किसान-मजदूर को अपनी चेतना का आधार बनाकर उनके साथ सहजता और अपेनपन का नाता तय किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व के धनी नागार्जुन की वेशभूषा भी साधारण तथा प्राकृतिक है। अपने दाढी-बाल की भी परवाह नहीं की। नियमित हजामत नहीं, बेतरबी से बिखरे बालों को सजना-सँवारने के लिए पास कभी आइना-कंधी-नही रखते थे। अब तो दाढी ही रखने लगे है। कपडों के बारे में भी वे बेफिक्र रहे है। सफेटद खादी का कुर्ता और धोती, लुंगी, धुला पाजामा, मोजा जूता और एखाद अंगोछा ही उनका वस्त्र भांडार था। अंगोछे को गर्मी में सिर पर रखते, जाडे में सिर से गले तक लपेट लेते, हात मुँह पोछने कें लिए तो कभी राह में बिठाकर बैठने-सोने के लिए प्रयोग करते। घूमंतू तबीयत के होने से जाडे में कोट-पँट या अलीगडी पतलूननुमा पाजामा चलता था। कपडों को कभी इस्त्री नहीं करेंगे लेकिन साफ सुधरा रखने में सजग रहते है। वे कहते है - "फटा कपडा पहनने से कुछ बनाता बिगडता नहीं है, गंदा मत पहनो।"[10] इस सादगी में भी चेहरे पर सहज-सरलता निरीहता के भाव सदा ही मोजूद दिखाई देते है।

दुबले पतले शरीर पर 1948 इ· में दमे ने जो हमला किया, वह आजीवन साथी बनकर रह गया। डॉक्टरी उपचार की लंबी प्रक्रिया और अनेक प्रकारके टेबलेटस् से चिढ होने से दमा का इलाज कभी लगातार नहीं किया। उबाला पानी और अमरूद खाना, रात का भोजन न खाना और मिताहार से ही दमा का इलाज करते रहे है। परवल लौकी, भिंडी, पालक आदि प्रिय तरकारियाँ है। लेकिन मिर्च मसाले से परहेज रखते है। पर चावल, मछल और आम के आचार एवं चटनी के प्रेमी है। मौसम के अनुरूप खीरा-ककड़ी, आमरूद आम और सेब का भी आहार की तरह प्रयोग करते है। शायद नागार्जुन पूर्णतः स्वस्थ भी रहना नहीं चाहते वे कहा करते है - "बुढापे में स्वास्थ ज्यादा अच्छा नहीं होना चाहिए। यदि अधिक उम्र में स्वास्थ अच्छा रहेगा तो व्यक्ति परिवार और समाज को परेशान करेगा।"[11] थोडे अस्वस्थ रहने में उन्हें सुख का अनुभव होता था।

अभी पंद्रह-बीस सालसे "इनो" की भी आदत लगी है। नशा-पान कुछ नहीं लेकिन पान, जर्दा, तंबाकू, खाना और नसा संुघना आदि कभी-कभार करते है। चाय मिले तो आनंद से लेते है। और न मिले तो भी प्रसन्न रहते है। नींबू वाली चाय अधिक पसंद करते है। शराब से परहेज होते हुए भी मित्रमंडली के खातिर दो-तीन चम्मच, काफी पानी डालकर लेते है। सौंफ-लौंग सदाही पास रखते है। सिगरेट पहले कभी पिते थे, अब दमा के कारण छुते तक नहीं। दूसरो के खान-पान के मामले में किसी तरह की दखल नहीं लेते। सोते वक्त कान से लगाकर रेडिओ सुनने की आदत थी। फिर चाहे जो स्टेशन और चाहे जिस भाषा का कार्यक्रम हो, बहुभाषी होने से कभी कोई भी कार्यक्रम अखरता नही है।

बुढापे के कारण रात में दस-साढे दसर के दरम्यान नींद हो या न हो बिस्तरपर चले जाते थे। रात के दो-तीन बजे निंद खुलती है तब से सुबह पाँच-छह बजे तक लिखते-पढते रहते है। संस्कृत के क्लासिकल ग्रंथो का और अत्याधुनिक युगीन ग्रंथो का अध्ययन एवं पारायण रूचि से करते है। रात में कम निंद लगने

के कारण महत्त्वपूर्ण काम भी क्यों न हो दिन में दो घंटे नियमित रूप में आराम लेते है।

नागार्जुन ने जिंदगी को एक सफर का ही रूप दिया था। उनकी यायावरी तथा जीवन पूर्वनियोजित तथा व्यवस्थित नहीं था। दिमाग में घुम्मकडी का विचार आते ही पांव में खुजलाहट होती है। याने की उनके पैरो में शनि है। तुरंग ही थैला लेकर किसी भी नगर का टिकट लेकर चल पडते है। इस भिक्बू "बाबा" के थैले में एक टार्च, छोटा ट्रांजिस्टर, एक अंगोछा, एक पाजामा, एकाध डायरी, पत्र-पत्रिकाएँ, औषधी गोलियाँ तथा इनो की शीशी आदि सामग्री होती है। चाहे काफी हाऊस हा चाहे मित्र की बैठक में हो, चाहे कवि संमेलन के मंच पर हो, चाहे राह में हो यह थेला उनके कंधे को लटकता ही रहता था। इसे हम उनके व्यक्तित्व की विलक्षणता ही कहेंगे। उनका बयान है -"मैं साधारण हूँ, अपने को साधारण ही कहलवाना पसंद करता हूँ। मैं तथाकथीत विशिष्ट लेखकों के जमात में नहीं हूँ। सामान्य की कोशिश मेरी हड्डियों तक मेंरूची बसी है।"[12] आजन्म प्रवासी नागार्जुन किसी एक जगह पर टिककर नहीं रह सकते। उनका कोई ठौर-ठिकाना न होने से किसी का भी घर उनका अपना है। अपने परिचित परिवारों की महिलांओ से घरवालों की तरह घुल-मिल जाते थे। चौके में जाकर उनके साथ सुख-दुःख की बाते करने का अधिकार पाया था। यह महिलाएँ अपने मन की बातें करने में संकोचती नहीं थी। उनके पसंद की चिज बनाकर खाने के लिए देती थी।

<u>निष्कर्षता</u>- हम कह सकते है कि नागार्जुन के व्यक्तित्व का बाहयपक्ष उनके विलक्षण आंतरिक व्यक्तित्व के समान ही असाधारण है। उन्होंने जन जीवन का व्यापक सर्वेक्षण कर लोक जीवन का व्यापक ज्ञान प्राप्त किया है, और उनके साथ आत्मिक तथा विश्वास का रिश्ता जोडा। नागार्जुन के रूप-रंग को देखते ही लगता है कि एक निर्लिप्त, औलिया साधारण लोगों के कल्याण के लिए अवतरित हुआ है।

नागार्जुन का व्यक्तित्त्व : आन्तरिक पक्ष :-

व्यक्तित्त्व के आंतरिक पक्ष में व्यक्ति के गुण, स्वभाव, रूचि, प्रतिभा, जीवनमुल्य, क्रियाकलाप, नैतिकता और मानसिक उथल-पुथल का समावेश होता है।

नागार्जुन के व्यक्तित्त्व के आंतरिक अंग पर उनके पारिवारिक तथा परिवेश का परिणाम दृष्टिगोचर होता है। निम्नवित्तिय ब्राहमण परिवार में जन्म होने से बचपन से अभावग्रस्त तथा रूढिग्रस्त होने से इस शलाका पुरूष में आक्रोश और क्षोभ, वेदना और करूणा के भाव स्थिर हो गए है। जर्जर वर्तमान समाज के प्रति घृणा कर चोट करनेवाले इस निर्भीक और बेलाग-चिरयात्री फकीर ने कलम को ही अपना हल और कुदाल बनाकर पीडा को वाणी दी है। मन ही मन कबीर और निराला को काव्यगुरू माननेवाले नागार्जुन का जीवन और व्यक्तित्त्व एक खुली किताब है। जिंदगीभर आर्थिक अभावों से जूझनेवाले इस फकिर में कंजूसी नहीं थी, वे खुले हाथ से खर्चीले रहे है। जून 1982 से जून 1983 तक उन्हें दस और पंद्रह हजार के दो पुरस्कार मिले। उससे न तो घर बनवाया न रूपये बँक में रखे। बच्चों को हजार-पंद्रह सौ दिए और बाकी के इधर-उधर उडाकर फिर प्रकाशक के पिछे लखडा लगाते रहे। प्रकाशक में और उनमें बार-बार झगडे और समझौता होता आया है।

संवेदनशील एवं भावूक होने से परिवार के एक-एक सदस्य की चिंता करते हुए अपने सामर्थ्य के अनुसार ढलती उम्र में भी मदत करते रहे है। पत्नी के कष्ट को कम करने के लिए उसे अनेक शहरों में रखने का प्रयत्न किया। स्वयं रूढि भंजक होते हुए भी पत्नी के व्रत-त्योहार, पुजा-पाठ में रूकावट नहीं डाली, कारण वे स्त्री-स्वातंत्र्य के पक्षपाती है। छह-छह सालोंतक प्रवासी रहते हुए भी व्यावहारिक विवेकी होने से पत्नी से संबंध वि-छेद के विचार ने कभी छुआ तक नहीं। उन्होंने अपने संतानों को भी बडे अनुशासन में नही रखा। अपनी बिटियाँ

उर्मिला और मंजू से उनके दिल में जितना आदर-स्नेह था उतना ही पुत्र-वधू रेखा, ललिता और सरिता के लिए भी था। वे बच्चों से बच्चों की तरह बाते करने में कुशल थे। बच्चों के साथ वार्तालाप में "वय" का प्रश्न बीच में नही आता। अपनी दाढी, चश्मा, मलम या पाकेट रेडिओ को बच्चों का खिलौना बनते देखकर सुख का अनुभव करते थे।

नागार्जुन का गुस्सा अल्पकाल याने बीस-पच्चीस मिनट का होता हैं। गुस्से में ऐसा रौद्र रूप धारण करते है कि किसी की कुछ नहीं सुनते। थोडे क्षण में जिस पर डाँट-फटकार पडी है, उसे ही साथ लेकर चाय-पान या खाना खाने के लिए जाऐंगें। चलते-चलते अपने गुस्से का कारण भी खुले दिल सें प्रकट करने की आदत है उनकी। इस अजनबी ने कभी किसी का मानसिक या आर्थिक बंधन स्वीकारा नहीं। नौकरी में या पत्रों के कॉलम लिखते वक्त बंधन महसुस होते ही उससे मुक्त हो गए है। मन का कहना या करने में बाधा तथा बंधन बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उनका हृदय अन्यायी बंधन, अत्याचार देखकर क्षुब्ध हो उठता था।

नागार्जुन में ज्ञानलालसा इतनी जबरदस्त है कि संस्कृत तथा आधुनिक ग्रंथो के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं का पारायण करना भी उनका नित्य कार्यक्रम था। हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली, मराठी भाषाओं के राजनैतिक और साहित्यिक पत्रों को खरीदकर पढने के शोकिन रहे है। कभी कभी यात्रा में अगल-बगल बैठे यात्रियों की बेमतलबी बातों से बचने के लिए उसकी चाव के अनुरूप पत्र स्वयं खरीदकर पढ़ने देने की अजब नीति नागार्जुन की थी। "ऐसी ज्ञान-साधना एक छियासठ वर्ष से शरीर से रोगग्रस्त और निरंतर चिन्ताकुल व्यक्ति में दुर्लभ पाई जाती है।"13 राहूलजी के छोटे गुरूभाई नागार्जुन को अनेक भाषाएँ आती थी। लेकिन उन्होंने अपनी विद्वता और बहुभाषिकत्व का कभी विज्ञापन नहीं किया है। अभी भी उनका

मन स्थिर नहीं हो पाया है। जितना पढा है, उससे आगे की जानकारी प्राप्त करने के लिए तीव्र जिज्ञासा जाग उठती है। नये रचनाकारों की रचनाएँ चाँव से पढकर उन्हें पत्र लिखकर प्रेरणा देने में कभी आलस नहीं किया। फलतः युवावर्ग उन्हें हमेशा चाहता रहा है। वे भी अपनी उम्र भुलकर उनके साथ तल्लीन हो जाते है।

नागार्जुन को एकान्त प्रिय लगता है, संभवतः वे अपने को पब्लिक से बचाने का प्रयत्न करते है। उन्हें आत्मप्रशंसा पसंद नहीं है। साहित्य संमेलनों तथा शिबिरों मे अवश्य जाते है, लेकिन साक्षात्कार देने से दूर रहते है। उन्हें राजनिती और राजनीतिक नेताओं से नफरत हो गयी हैं। उन्हें सभी राजनीतिक नेता झुठे और ढोंगी दिखाई देते है। उनका हस्ताक्षर सुंदर था। हस्ताक्षर को देखकर ही कलकत्ता के संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य एस·एम्·दासगुप्ता ने उन्हें अपने कॉलेज में प्राकृत का विशेष अध्ययन करने के लिए एडमीशन दिया था।

नागार्जुन निर्लोभी होने से धनसंपदा तथा पुरस्कार को कभी महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने बिहार सरकार से मिलनेवाली तीन सौ रूपये की मासिक वृत्ति ठुकरा दी थी। किसी लाभ के लिए पालतू बनकर रहना उन्हें पसंद नहीं था। वे कहते थे कि - "मुझे कोई राजकिय सम्मान मिलता है, तो मेरी आत्मा मुझे धिक्कारने लगती है। मैं सोचने लगता हूँ कि मैंने ऐसा कौनसा पाप किया है कि मुझे उसका दंड मिल रहा है। मैं तो राजाओं का, शासनों का विरोधी रहकर ही सुखी रह सकता हूँ।"[14] उन्होंने पुरस्कार आदि पाकर अपने कलम की तीव्र धार को कुंठित नहीं होने दिया। सन 1977 में बिहार सरकार के द्वारा सोंपा हिन्दी मैथिली विषयक कोई काम थोडे ही दिनों में छोड दिया। कारण वेतन भोगी बनना उनकी वृत्ति ही नहीं थी।

नागार्जुन का स्वभाव मुंहफट ओर अक्खड होने से गलत काम के लिए सबको फटकारते थे। स्पष्ट वक्ता होने के कारण खरी-खोटी सुना देना उनका

जन्मजात गुण ही है। बेलौंस बाते उनके स्थायी मन-मस्तिष्क की पहचान ही है। वे इतना जिद्दी है कि जन्मजात अभाव-असह्य पारिवारीक यातनाएँ और संघर्ष की प्रतिकुल परिस्थितीयों के सामने पराजित होना कभी स्वीकार नहीं करते। चंचलवृत्ति और बेफिक्र होने से आर्थिक दुरावस्था थी, लेकिन स्वाभिमानी इतनो है कि पैसों के लिए किसी के सामने याचना नहीं की। निर्धन व्यक्ति के प्रति आत्मीयता होने से उनके बीच सहज और सुखी रहते थे प्रायः धनियों, के घर जाना टालते ही रहते है।

आडम्बर से नफरत करनेवाले नागार्जुन स्वभाव से विद्रोही है। विद्रोहवृत्ति की नींव उनके छात्र जीवन से ही दिखाई देती है। काशी में जिस छात्रावास में रहते थे, उसकी पहली मंजिल की धर्मशाला में किसी बुढिया की लाश थी। उस लाश की मणकर्णिका घाट पर ले गए और अपने हाथों उस बुढिया का अन्तिम क्रिया की। भावी जीवन में विद्रोह उनके पीडायुक्त और अपमानित परिवेश की देन है। वे मानसिक उदासी तथा क्रोध के क्षणा में मनोरंजन को महत्व देते है। एक हात पर दुसरा हाथ मारकर जोर से हँसने की और नंगे पाँव घाट पर चलने की आदत है।

लापरवाह और अस्ताव्यस्तता नागार्जुन के व्यक्तित्त्व की खुबी है। उनकी किताबें और सामान एक जगह नहीं होता कि अपनी वस्तूएँ किसी के घर रखी है, यह भूल जाते है, यदि याद हो तो भी वे उस घर तक दुबारा नहीं आते। लिखकर रखना और भूल जाना उनकी आदत थी। भविष्य के कामकाज के बारे में कोई नियोजन उन्होंने कभी नहीं किया है। उनके लिखने की कोई खास टेबिल नहीं और न रचनांओं की कोई फाईल है।

निष्कर्षता हम कहते है कि नागार्जुन सबल व्यक्तित्त्व के धनी है। सदा घुमना, जादा पत्रव्यवहार, सुक्ष्म अध्ययन, आर्थिक अस्थिरता और संवेदनशील

होने से चंचल ही लगते है। जाती-पाति के भेदभाव को विरोध और रूढी तोडक वृत्ति इस दुबले-पतले लेकिन साहसी व्यक्ति में बचपन से ही निर्माण हो गयी थी। वे परिस्थितियों से प्रभावित होते रहे है, लेकिन परिस्थितियों को भी परिवर्तित कर उसे इच्छानुरूप आकार देने में कामयाब हो गए है। जिंदगीभर उनके प्रखर विचारो में और बाहय वेश-भूषा में परिवर्तन नहीं हुआ है यह उनके प्रामाणिकता और खरेपन की निशानी है।

साहित्यिक व्यक्तित्व :-

नागार्जुन के साहित्य का संसार वास्तविक रूप में सर्वहाराओं का संसार है। वे अपने साहित्य के द्वारा पुरानी दुनिया को बदलकर नये ढंग से संगठीत और विकसित करना चाहते है। वे सामाजिक परिवर्तन की अपनी सफलता के लिए युवा पीढी पर भरोसा कर उन्हें ही जागृत करते है। नागार्जुन गाँव में पैदा हुए है और उनका गाँव की भोलीभाली जनता से हार्दीक प्रेमसंबंध रहा है। नागार्जुन का साहित्य ही नहीं बल्कि संपूर्ण जीवन क्रांती की लहरों से उद्वेलित है। वे चाहे नगर में रहे या महानगर में उस ग्रामीण जन को कभी नहीं भुला पाये। जो निरंतर प्रताड़ीत होता रहा है और हो रहा है। वह लगातार नागार्जुन के साथ रहा है, वे उनके आंसू पोंछते रहे और अपने आंसू बहाते रहे। जन आन्दोलन में खडे रहने वाले नागार्जुन वामपंथ की ओर राष्ट्रीय और सामाजिक परिवर्तन की चर्चा कर श्रम और सामूहिक संघर्ष का समर्थन करते हैं। उनकी पक्षधरता किसी दल विशेष के साथ न होकर आम व्यक्ति के साथ है।

नागार्जुन की देशभक्ति वाचिक नहीं तो चिंतनपरक है। उनके दिल में शोषक समाज के प्रति क्रोध है। अगर "नागार्जुन की आधी ताकत कोप और अभिशाप को व्यक्त करने मे न खर्च हो पाती तो शायद हम हिन्दी मे अपना कालिदास नागार्जुन के रूप में पा लेते।"[15] नागार्जुन सामाजिक सहानुभूतो और

पाठक की आत्मीयता प्राप्त करने में सफल हुए कलाकार थे। उन्होंने मार्क्सवाद को राष्ट्रीय और सांस्कृतिक परंपराओं के अनुरूप परिवर्तित किया है, अतः उनकी दृष्टि एकांगी नहीं। वे नारी के आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता के हिमायती है, और यह स्वतंत्रता नारी अपने सामर्थ्य से प्राप्त करेगी यह उनका आशावाद है। वे क्रांति के लिए किसी सुधारक तथा अवतारी पुरूष की राह नही देखते। उनके पात्र ही अपनी लढाई लढनेवाले है। उनके पास बाधांओ से जुझनेवाली सेना है। आवश्यकता सिर्फ उन्हें संगठित करने की है। उनका साहित्य याने श्रमिक जनता की ओर से किया गया शब्द मेघ है। जिस में जड़-पुरातन सामंतवाद की आहुति देकर जनचेतना दिग्वीजय की घोषणा की है। उनका यह प्रगतिवाद सबसे पहले मानवीय है, फिर राष्ट्रीय।

जन पीड़ा और सामाजिक असंतोष ही उनके लेखन के प्रधान अनुभव है। जिस में पीडित मानवता के शोषण और अत्याचार के खिलाप मोर्चाबंदी है। उन्होंने पंडिताऊ या वक्तकाटू साहित्य नहीं लिखा है। बल्कि व्यक्तिगत घटनांओ को भी सामाजिक आकार देकर पेश करते है। देश की गरिबी, भुखमरी, अकाल बाढ़, राजनीतिक पंडागिरी और भोली-भाली जनता की निरंतर उपेक्षा से नागार्जुन का मन अपने साहित्य में बेचैन है। इन्हीं समस्याओ से बार-बार टकराते हुए आम जनता को उठने-जागने और जागकर संगठित होने की प्रेरणा देकर लढने का संदेश देते रहे है। जरूरत पडी तो खुद भी उसका नेतृत्व किया।

समाज हीत के लिए सदा चिंतनशील और संवेदनशील व्यक्ति के धनी नागार्जुन के मन में भ्रष्टाचार, राजनीतिक, आडंबर ओर रूढी के खिलाफ आक्रोश है। उनके साहित्य में व्यक्त व्यंग्य, आक्रोश विद्रोही वृत्ति, खरी-पैनी बात सुनाना, दलित समुदाय के प्रति सहानुभूति नागार्जुन के जीवन मे आये अभावों और अनुभवों की ही प्रतिक्रिया है। पारिवारिक और सामाजिक समस्यांओ ने उन्हें अनुभूति दी

और मैथिली, संस्कृत और हिन्दी के ज्ञान से सशक्त अभिव्यक्ति। ऐसे महान प्रतिभाशाली साहित्यिक को हिन्दी में घोर उपेक्षा और असहिष्णुता का सामना करना पडा।

नागार्जुन की रचनाएँ उबड-खाबड लगती है, पर चट्टान की भाँति मजबुत है। भविष्य में जब कभी अराष्ट्रीयता, भ्रष्टाचार दिवालियापन , शोषण का वातावरण होगा, नागार्जुन की रचनाएँ अगली पीढीयों के काम आकर स्वत्त्व की रक्षा और उसके लिए संघर्ष करने को उकसाती रहेगी। ऐसी कालजयी साहित्यकार के रूप में नागार्जुन अमर ही रहेंगे और अपनी रचनाओं के प्रत्यक्ष उदाहरण से प्रेरक और गुरू होंगे। आज भी नागार्जुन के दहकते साहित्यिक व्यक्तित्त्व में परिवर्तन तथा शिथिलता नहीं आई है, तो वह पुरानी तडप और आग वैसी ही है। नागार्जुन ने सहा है, उसके कारण शब्दो को सामर्थ्य और व्यक्तित्त्व मे निखार आया है, जो अद्वितीय है। फलतः आज बुढापे में भी इस धरतीपुत्र का पसीना भट्टियों के समान ललकरता हुआ खडा है।

निष्कर्षता हम कह सकते है कि सबल व्यक्तित्त्व के धनी नागार्जुन मनमौजी स्वभाव के रहे। उनके साहित्य की जीवनपध्दती संयम और अराजकता, प्रगतिवादी और राष्ट्रवाद के समान रही है। राजनिति के अमानवीय चेहरे को उन्होंने बडे निर्मलता से अपनी रचनाओं में उजागर किया। बाबा नागार्जुन के लिए रचनाकर्म, जीवनकर्म का ही एक विस्तार है इस मायने में भी बाबा हिन्दी साहित्य के उन दुर्लभ रचनाकारों में है, जिन्होंने जीवन और संघर्ष को ही अपनी रचनाओं की विषयवस्तू बनाया। नागार्जुन की प्राणवंत प्रखर प्रतिभा भारत के सर्वहारा वर्ग को दीपस्तंभ के रूप में संगठन, संघर्ष और उन्नति का संदेश देती रही हैं।

नागार्जुन का कृतित्व :- .

नागार्जुन की बहुमुखी प्रतिभा, व्यक्तित्त्व की अनेक रूपता और बहुभाषिकत्त्व की तरह उनका साहित्यिक कृतित्त्व भी बहुविधात्मक है। काव्य, काव्य संकलन, लघुकाव्य, खण्डकाव्य, उपन्यास, बालसाहित्य, बालजीवनी, निबन्ध, लघुप्रबन्ध, अनुवाद, पत्र-पत्रिकांओ का संपादन आदि विधांओंपर मैथिली, संस्कृत और हिन्दी में उन्होंने अपनी लेखनी समान रूप से चलायी। हम पहले उनकी कवितांओ के बारे में परिचय प्राप्त करेंगे। कारण हमारे लघु-शोध प्रबन्ध का सम्बन्ध उनका खण्डकाव्य "भूमिजा" का मूल्यांकन है।

नागार्जुन की कविता :-

नागार्जुन हिन्दी कविता धारा के उन प्रमुख स्तम्भो में है जिन्हें कविता को रचा नहीं, बल्कि उसको जिया भी। जनकवि होने के कारण उनमें तरल संवेदनात्मक आवेग है, इसलिए वे सीधे जन-साधारण से जुड जाते है। उन्होंने स्वयं को तरल आवेगों वाला हृदय धर्मी जनकवि कहा है, इसलिए वे किसीसे डरते नहीं बल्कि फटकार बनाते है। "कविता में नागार्जुन की दिलचस्पी का दायरा बहुत बडा है। और बातो को छोड भी दे तो भाव बोध और मानवीय स्थितियो की जैसी विविधता उनके यहाँ है, वैसी अन्यत्र नहीं। उनकी कविता एक तरह से अपने संपूर्णता में विगत चालीस वर्षो के भारतीय जीवन के उथल-पुथल की महागाथा है।"[16] जन से सीधे जुडने की जो प्रवृत्ति नागार्जुन मे दिखलाई देती है अन्य कवियो में दुर्लभ है। "समकालीन कविता के इतिहास में नागार्जुन का बहुत बडा योगदान यह माना जाएगा कि उन्होंने पुनः कविता को विशिष्ट बोध से सामान्य बोध की तरफ मोडने का प्रयास किया। इसी प्रयास मे चलते उनकी कविता के इस क्रांतीकारी चरित्र का निर्माण हुआ है। जिसकेहम इतने अभ्यस्त हो गये है।"[17] इस प्रकार हम कह सकते है कि नागार्जुन के पास कविता से बाहर कुछ भी नहीं

है अथवा उनकी कविता सब में और सब जगह है। उनमे शोषित प्रताड़ित जन के प्रति तरल एवं राष्ट्रप्रेम है, तो प्रकृति के प्रति रागात्मक भाव, देश के प्रति प्रेम है, तो आततातियों के प्रति मार भगाने का संकल्प। इस प्रकार इन्हें विविधता का कवि कहे तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। "नागार्जुन ने अपने जीवन के लगभग पचास वर्षो मे हजारों कविताएँ लिखी है। एक एक कतरे को कविता में जोडने से जो नक्शा बनाया है, वह इतना विस्तृत इतना जनसंकुल है कि किसी एक विषय या सुत्रो में उनके काव्यलोक को व्यक्त नहीं किया जा सकता। ये हजार-हजार बाहेवाली कविताएँ है, हजार दिशांओ को इंगित करती हजार वस्तूंओ को अपनी मुठि्ठयों मे थामे।"18

निष्कर्षता :-

उनके काव्य में सामाजिक विषमता के स्थानपर एक ऐसे समाज की रचना पर बल दिया गया है, जहाँ सभी अपना पूरा अधिकारी पा सके और शोषणकारी ताकतों का खात्मा हो।

काव्य कृतियाँ :-

युगधारा, प्यासी पथराई आँखे, सतरंगे पंखोवाली, खून और शोले, प्रेत का बयान, चना ज़ोर गरम और अब तो बन्द करो, हे देवी यह चुनाव का प्रहसन, खिचडी, विप्लव देखा हमने, हजार-हजार बाहोवाली तथा तुमने कहा था। "तालाब की मछलियाँ" मे पूर्व प्रकाशित कुछ काव्य ग्रंथो की चुनी हुई कविताएँ है। इनमें से शुरू के काव्य ग्रंथ अनुपलब्ध है। "भस्मांकुर" एक खण्डकाव्य है, जिसमें कामदहन के प्रसंग को बरवै छंद में लिखा गया है। "भूमिजा" और एक खण्डकाव्य है, जिसके राम पूरी रामकथा के राम से अधिक जनोनुकूल अन्ततः शाश्वत एवं सनातन है। मैथिली में प्रकाशित `पत्रहीन नग्न गाछ' जो कि मैथिली मे था भी अब हिन्दी में अनुवाद हो चुका है।

हमने नागार्जुन की कविता को समझने के लिए वर्गीकरण करके देखने का प्रयास किया है हालाकि उनकी धारा को समझने के लिए स्पष्टता कोई रेखा नहीं खींची जा सकती। फिर भी अपनी सुविधा की दृष्टि से मोटे तोर पर इस दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। इसमें - 1. रागबोध की कविताएँ -जिसमे प्रकृती ओर प्रणयपरक दोनों तरह की कविताएँ, 2. यथार्थपरक कविताएँ -इसमें सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक यथार्थपरक कविताएँ। 3. राष्ट्रीयता से युक्त कविताएँ। 4. व्यंग्यप्रधान कविताएँ। जो कि उनकी काव्यधारा का मूल अन्तः श्रोत है। यह विभाजन अंन्तिम हो ऐसा तो नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि नागार्जुन की कविताएँ अधिक संवेदनात्मक तथा व्यापक है। अतः उन्हे स्पष्टतः किसी विभाजित रेखा के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है।

1. **रागबोध की कविताएँ :-**

इनके अन्तर्गत उन कविताओं को लिया जा सकता है, जिनमें उनका प्राकृतिक सौन्दर्यबोध और वैयक्तिक जीवन की रागात्मकता की अभिव्यक्ति मिली है। ये कविताएँ संवेदनात्मक गहराई को लेकर चलती है। प्रकृति-प्रणय की अनुभूतियों से सम्बध्द कविताओं के अतिरिक्त नागार्जुन ने कुछ कविताएँ ऐसी लिखी है जिनसे तरौनी ग्राम, इमली के पेड और गांव के सीवान पर तैरती माटी की सौंधी महक है। जिसमें रह-रहकर रचनाकार डुबता-उतरता रहता है। इन लौटती कविताओं को भी इसी भावबोध के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है।

प्राकृतिक सौदर्य की कविताएँ :-

यायावरी जीवन व्यतीत करनेवाले कवि ने देश-देशांतर के अनुभव बटोरे ओर उन अनुभवों के आधारपर प्रकृति को उसके नाना रूपों में देखा। जिसमें सर्वाधिक प्रशंसित कविताओं में 'बादल को घिरते देखा' है। इसमें मैदानी

भागों मे आकर हिमालय की गोद में बसी झीलो में क्रिडा कौतुक करते हंसो और निशाकालों में शैवालों की हरी-दरी पर प्रणयस्त चकवा-चकवी के दृष्यबंध प्रस्तूत तो किये ही, साथ ही कही पगलाएँ कस्तूरी मृग को कविता में ला खडा किया-

"निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो होकर
अपने उपर चिढते देख है
बादल को घिरते देखा है।"[19]

'बसंत की अगवानी' में उसके स्वागत के लिए कवि की ये पंक्तियाँ देखिए जिसमे कवि ने बसंत का चित्र उपस्थित है।

"वृध्द वनस्पतियों की बुढी शाखाओं में
पोर पोर टहनी का लगा दहकने
से निकले मुकुलो के गुच्छे गदराये
अलसी के नीले फूलों पर नभ मुस्काया।"[20]

प्रकृति के प्रति नागार्जुन मे विशेष आकर्षण है। प्रकृति प्रेम उनकी ताजगी की प्यास बुझाता है। उनका प्रकृति प्रेम कृत्रिम नहीं बल्कि सहज और नैसर्गिक है -

यह कूरी धूप,
शिशिर की यह सूनहरी, यह प्रकृति का उल्लास
रोम रोम बुझा लेना ताजगी की प्यास।"[21]

बसंत को कवि ने विशेष ललक से देखा है। बसंत के आगमन पर चहूँ ओर वातावरण उल्लासमय हो जाता है। इसी तरह "शरद पूर्णिमा", "अब

के इस मौसम मे "झुक आये कजरारे मेघ" आदि कवितांओ मे नागार्जुन का सहज प्रकृति चित्रण देखा जा सकता है।

ऋतु परिवर्तन के अनेक चित्र नागार्जुन की कवितांओ के विशेष आकर्षण है। "तालाब की मछलियाँ" में संग्रहित "बसंत की अगवानी" तथा "नींम की दो टहनियाँ" में प्रकृति का याथायथ्य चित्रण आ गया है। "बादलो को घिरते देखा है" में पाँचो दृश्यो का सौदर्यमूलक परिवेश एकदम सहज और मनोरम बन पडा है। ग्रामीण सौदर्य चित्रण में नदी, तालाब, अमराई, खेत-खलीहान आदि के जो दृश्य पट संजोये है वे अपनी मनोरम छवि से पाठक को बार-बार रसभीनी अनुभूतियों में ले जाते है। पावस ऋतू मे उठती मिट्‌टी की सौंधी महक, कजरारे मेघों की घुमडन, दादूर - मोर - पपीहा की गुंजती स्वर लहरियों, रह-रह चमकती बिजली की आँख मिचौनी में नागार्जुन अपने को प्रस्तुत करते से दिखलाई पडते है।

"कुहरा क्या छाया" में कवि को सब कुछ कुहरे से दबे ठके लगते है, तो "कोयल आज बोली" में बसंत की मदोन्मत प्रवृत्ति का सजीव चित्र प्रस्तुत कर दिया है। "घन घुरंग" कविता में मौज-मस्ती का यह आलम देखिए -

"नभ में चौकडिया भरे भले
शिशु घन बुरंग।
खिलवाड देर तक करे भले
शिशु घन कुरंग।
लो आपस में ग्रंथ गाये खूब
शिशु घन कुरंग।
लो घटा जल मे गये डुब
शिशु घन कुरंग।"[22]

इस प्रकृति को नाना भावभूमियों में नागार्जुन ने चित्रित किया है। कभी वह उल्लास से नाचती है तो कभी डराने भी लगती है। कही प्रकृति का मानवीकरण किया है। जो मनुष्य के सुख-दुःख का भागीदार है, तो कही कवि बरसात का स्वागत करने के लिए खुद तत्पर रहता है और कही-कहीं प्रकृति पण के साथ कवि को युग की पीड़ा भी सलती है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि नागार्जुन ने प्रकृति का सजीव और स्वाभाविक चित्रण अपनी कविता में किया है। कवि उल्लास के साथ प्रकृति भी उल्लासमय है। जन-साधारण के सुख-दुःख में भी अपनी भागादारी निभाती है। और यह सब तभी हो सकता है जब कवि का भी उसके साथ सहज और आत्मिय संबंध कायम हो और यह आत्मीयता कवि नागार्जुन मे देखी जा सकती है।

प्रणय भाव की कविताएँ :-

नागार्जुन के कवि हृदय मे अपनी प्रेयसी पत्नी के प्रति गहरी रागात्मकता देखी जा सकती है। उसके साथ जी गयी जिंदगी के आत्मीय क्षणों में कवि बार-बार खो जाता है। घुमक्कडी जीवन अपना लेने के बाद प्रिया का बिछोह समय-समय पर अंन्तर को वेधने लगता है। नागार्जुन सामाजिकता के सदैव पक्षपाती रहे है। इसीलिए उनके प्रणयचित्र शालीनता और गरिमा से युक्त है। "सिंदूर तिलकित भाल" में प्रिया स्मरण के साथ मिथिला के ग्रामांचलो के प्रति भाव रचनाकार का अटूट लगाव देखा जा सकता है। यह "दन्तुरित मुस्कान" कविता मे कवि अपनी प्रेयसी-पत्नी की दन्तुरित मुस्कान झोपडी में खिले हुए जलजात सदृश्य है, पर नोछावर हे साथ ही पत्नी के सानिध्य के लिए प्रेयसी की माँ को धन्य करार देता है -

"यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज
मैं न सकता देख,

मै न पाता जान,

तुम्हारी यह दन्तुरित मुस्कान।"[23]

यहाँ प्रवासी जीवन का त्याग कर ग्रहस्थ धर्म मे दीक्षित होने के बाद की स्थिति की अभिव्यंजना हुई है। कवि के स्वस्थ प्रेम का यह प्रेरणादायी रूप भी देखिऐ।

"एकरस आदिराम

शिरायें, फडकी

धमानियों मे हुआ फिर स्फूर्ति का संसार

जिंदगी को दे रहे संदेश मे झींगुर हजार हजार

लगा बहाने दक्षिणा निल।"[24]

प्रेम का यह रूप प्रेरणादायी हे, जिसमे मांसलता की गंध कही दूर तक नहीं है। प्रणय की ऐसी भावाकुलता ही समर्पण पैदा करती है। प्रेमीजन भी भिन्न-भिन्न मनःस्थितियों मे जीता क्रोधावेग की मनःस्थिती में प्रेमी के होने पर उसकी छबि को बडे ही कोशल्य के साथ आँका गया है -

"अर्धस्फुट कमल पंखडियों को क्या हो गया था जाने

निकलते रहे बाहर। एक के बाद एक। काले काले और गालियाँ

आक्रोश अभिशाप हिलते रहे होंठ। देर तक हिलते ही रह गये

हिलती रही देर तक। अर्ध स्फूट कमल की भिगी पंखुडियाँ।"[25]

जिंदगी का अकेलापन दूर करने के लिए नागार्जुनजी ने अपने सिगरेट पीने वाली प्रेमिका को "आओ प्रिय आओ" कहकर बुलाया। व्यंग्य मिश्रित रागासक्ति को व्यंजित करती यह कविता नागार्जुन की देशकाल के अनुकूल अपने से परिमार्जित करतो चित्तवृत्तियों को समझने मे सहायक, होती है। नागार्जुन अपने रोमांस को इसप्रकार

उजागर करते है -

"झुकी पीठ को मिला। किसी हथेली का स्पर्श।
तन गई रीढ़ महसूस हुई कंधो को। पिछेसे।
किसी नाम की सहज उष्मा निराकुल सांस। तन गई रीढ़।
कौंधी कही चितवन रंग गये कही किसी के होंठ।
निगाहो के जरिये जादू धुल अंदर। तन गई रीढ़।"26

नागार्जुन के यहाँ से सभी प्रणयानुभूतियाँ समर्पण और आस्था से उपजी है। प्रेम उनके लिए संस्कार है जो मनुष्य की संवेदनाओं को विस्तार तो देता ही है, साथ ही उसके सोच को भी मानवीयता की गरिमा प्रदान करता है।

लौटती ॄनास्टेल्जिकॄ कविताएँ :-

प्रवास काल के दौरान नागार्जुन को अपना छुटा हुआ घर, गांव के संगी, साथी, अमराइयाँ और उनमें कोयल की तन-मन को बींध जानेवाली स्वर लहरी की याद आती है। नागार्जुन को जीवन यात्रा का अधिकांश यायावरी आंदोलन और जेलो में बीता है। इन सबके बीच कवि जैसे संवेदनशील व्यक्ति का अपने पूर्ववर्ती जीवन से अनासक्त रह पाना नितांत असंभव है। बदलती हुई स्थितियाँ नागार्जुन की कविता को बराबर प्रभावित किये रहती है। ऐसी कविताओं में तो "नास्टैल्जिया" उभरा ही है, जो पूर्णतः "नास्टैल्जिक" या लौटती कविताएँ कही जा सकती है। "सिन्दुर तिलकित भाल" जैसी कविता भी उपरी तौर से तो प्रणय भाव की कविता है, लेकिन इस कविता के भीतर उभरी हुई होमसिकनेस को भी महसुस किया जाता है।

"याद आते स्वजन। जिनकी स्नेह से भीगी अमृतमय आंचल
याद आना मुझे अपना वह 'तरडनी' ग्राम
याद आती लीचियाँ, वे आम

याद आते शस्य श्यामल जनपदो। के रूप गुण अनुसार ही
रखे गये वे नाम।"[27]

"विजयी के वंशधर" कविता में भी दशहरे के दिन गांवो में जुडने वाले मेले, लोगों की रूचियों, वेशभूषा आदि के दृश्यबन्धो में कवि का "नास्टैल्जिया" दिखाई पडता है। बहुत दिनों के बाद पकी हुई फसलों के देखने में धान कुटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान में जी भर ताल मखाना खाती और गन्ने चुसने में बीता हुआ ग्रामीण जीवन रह-रह कर बोलता है।

इसप्रकार की कवितांओं में नागार्जुन का कवि व्यंग्यात्मक नहीं होता। इन कविताओं की यह उपलब्धी कही जा सकती है। अन्यथा जिस कवि का प्राणतत्व ही व्यंग्य-विद्रोह रहा है। वह भी इन कवितांओं में सिर्फ अपने को कोसता दिखाई देता है। यह नागार्जुन की उर्जा ही कही जायेगी कि वे एक ही स्थितिपर व्यंगात्मक और रागात्मक दोनों तरह की कविता लिख सकते है।

2· **यथार्थपरक कविताएँ :-**

नागार्जुन सबसे पहले सामान्यजन है और बाद में रचनाकार। एक आम आदमी की हैसियत से जीवन जीने वाले रचनाकार का हीन-दीन दलित वर्ग के कष्टों किसान मजदूर के संघर्षो और भूखे प्यासे लोगों की पीड़ाओं के साथ और उतनी ही गहराई के साथ महसूस करना स्वाभाविक है। सही मायने में नागार्जुन ने इस देश के शोषित प्रताडित गरीब लोगों को वाणी दी है। किसान मजदूर और निम्न मध्यवर्ग का शोषण करनेवाली ताकतों के वे हमेशा विरोधी रहे है और व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए क्रांति का आव्हान करते है "नागार्जुन जितने सचेत रूप से क्रांतीकारी है, उतने ही अचेत रूप से भी है। उनका क्रांतीकारकत्व एक ओर साम्राज्यवाद, सामंतवाद और पूंजीवादी की प्रखर आलोचना मे प्रकट होता है, दुसरी ओर वही उनकी कला द्वारा हिन्दी जातीयता के स्तरपर विभिन्न

जनपदो की श्रमिक जनता को एकताबध्द करने में प्रकट होता है।"[28] कविता आदमी को किस तरह लढाई की समझ देती है यह नागार्जुन को कविताओं को पढकर भलीभाँती जाना जा सकता है। उनकी कविताएँ लढाई के मुद्दे भी स्पष्ट करती है। थोडी बारीकी के देखा जाये तो नागार्जुन अपनी रचनात्मकता का उत्स बरसों से चले आ रहे मानवता-अमानवता के दंड से तलाशनेमेंदिखाई देते है। "व्यक्तिगत दुःख पर न लककर वे बार-बार व्यापक दुःख पर प्रकाश डालते है और यही सच्चे कवि की पहचान है। अंतः धरती, जनता और श्रम के गीत गानेवाले उस युग के संवेदनशील कवियों में नागार्जुन का नाम सदैव अमर रहेगा।"[29] जीवन के भिन्न-भिन्न संदर्भो में आज की वास्तविकताओं को उन्होंने अपनी रचना भूमि बनाया है, कही सामाजिक मर्यादाओं को तो कहीं राजनिति, राजनेताओ और तथाकथित व्यवस्था के नियामको व्यंग की पैनी धार से छीला है। आर्थिक वैषम्य को शोषकों और शोषित की दूरियों और किसान मजदूर की हीनहीन दशोओं के चित्रण द्वारा उभारा है।

सामाजिक यथार्थ :-

नागार्जुन सन 1931 से राष्ट्रीय क्षेत्र में सक्रिय रूप से जुड गये थे। यह समय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जन जन की भूमिका को निर्णायक बिंदू प्रदान करनेवाला था। नागार्जुन प्रारंभ से जन-मन के सजग चितेरे रहे है। नागार्जुन की कविताओं मे सामाजिक संघर्ष मुख्य रूप से मुखरित हुआ है। जब व्यक्तिवादी कवि अपने ही घेरे में बंधे खुद के सुख-दुःख का राग अलाप रहे थे, उससे पूर्व ही नागार्जुन ने सामाजिक संघर्ष की ओर अपनी कविता को तो मोडा ही खुद भी उसमे कुद पडे। वे अपने समय के यथार्थ से गहरे जुडे हुए है। यथार्थ की सभी पहलुओं पर इनकी पैनी दृष्टि रही और उनके विचार और कार्य में कही कोई द्वैतता नहीं है। इसलिए उनकी अभिव्यक्ति सच्ची और ईमानदार अभिव्यक्ति है क्योंकि उनकी कविताएँ जन से परे नहीं बल्कि उसके संघर्ष में बराबर की भागादारी निभाती है। इस तरह व्यापकता मानवीय प्रतिबध्दता के कारण वे

धीरे-धीरे मार्क्सवादी विचारधारा के अधिक निकट आते गये। मानव कल्याण का मार्ग कम्युनिजम को मानकर चलने लगे और "लालचीन" के मकरन्द के भारत के आगमन का सपना देखने लगे।

"चीन समुचा लाल हो गया
या
अब है भारत भी बारी
चीन विरोधी बकवासो से होगा न सवाल।"[30]

साम्यवाद के प्रति आकर्षण के कारण ही नागार्जुन की चेतना उसकी ओर बढती है। उनकी कविताओं में धीरे-धीरे रागबोध का स्थान यथार्थ बोध ने लिया और वे अन्याय, शोषण, गरिबी, भुखमरी, बदहाली, अकाल आदि स्थितियों को अपनी कविताओं में चित्रित करने लगे। देखना ओ गंगा मैया, खुरदरे, पैर, नाकहीन मुखडा, अकाल और उसके बाद जैसी कविताएँ किसान मजूदर के प्रति सहानुभूति के भाव से प्रेरित कविताएँ है -

"खुब गये। दुधिया निगाहो में, फटी बिवारयो वाले खुददरे पैर
दे रहे थे गति। रबड़ विहिन ठूंठ पैडलो को। चला रहे थे।
एक नही दो नही, तीन-तीन चक्र। कर रहे थे मात
त्रिविक्रम वामन के पुराने पैरो को। नाप रहे थे धरती का
अनहद फासला। घंटो के हिसाब से ढोये जा रहे थे।"[31]

यहाँ एक गरिब रिक्शा चालक का यथार्थ साकार हो गया है। निम्न मध्यवर्गीय जिन्दगी की विसंगतियों को कवि नागार्जुन ने स्वयं भोगा है। फटी पुरानी दरी को रस्सी से बांधकर और कंधे पर लटकते शांति निकेतनी झिलों में आम जरूरतों की वस्तुंओं को डालकर जो रचनाकार अपनी यात्र तय कर रहा है। वह ही पुल पर से गुजरती रेल से नदी {गंगा} की छिछली उथली धारा में यात्रियो द्वारा

फेंके गये पैसों को ढूंढते मल्लाहो के नंग धडंग छोकरों की अनुभूतियों और इच्छाओं के सजीव दृश्य अपनी कविता में प्रस्तुत कर सकता है । -

"बीडी पीयेंगे .... आम चुसेंगे .... या कि मलेंगे देह में
साबुन की सुगंधित टिकिया। लगायेंगे सर में चमेली का तेल।
या कि हम उम्र छोकरी को टिकली ला देंगे।
पसंद करे शायद वह मगही पान का टकही बीडा।
देखना ओ गंगा मैया।"[32]

नागार्जुन ने वर्ग वैषम्य अन्वर्विरोधी ओर व्यंग के माध्यम से भी सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है अकाल के बाद फैली भुखमरी को नागार्जुन ने इस तरह व्यक्त किया है -

"कई दिनो तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनो तक कानी कुतिया सोई उसके पास
कई दिनो तक लगी भीतपर छिपकालियों की गश्त
कई दिनो तक चूहों की भी हाल रही शिकस्त।"[32]

अभांवो से ग्रस्त देश को स्थितियों को देखकर नागार्जुन बैचेन हो उठते है और दाने-दाने के लिए तरसते पीडीत वर्ग के खाली पेट की आवाज बुलंद करते है-

"खाली है हाथ खाली है पेट
खाली है थाली खाली है प्लेट।"[34]

जमींदारी प्रथा के उन्मुलन के बाद भी ग्रामीण किसानों से उसकी जमीने के बल पर छीन ली गयी और हर तरफ लूट का साम्राज्य फैलता चला गया।

"कहाँ गया जमींदारी का उन्मुलन का फरमान
छिने जा रहे गाछी, गोचर, पोखर और स्मशान

गांव गांव मे लुट मची है भैरो बने लठैत।"[35]

'अजि धन्य हो कवि कोकिल तुम" में युगबोध से दूर रहने वाले छायावादी भावबोध के कवियों के यथार्थ को व्यंग्यात्मक स्तर पर उतेरा है। "तो फिर क्या हुआ" में बुध्दिजीवी वर्ग की समझौतापरस्ती और कठमुल्येपन को "जयति नंखरंजनि" में आधुनिकतांओ की फैशनपरस्ती और दायीत्वहीनता को "विज्ञापन सुंदरी" में माडलिंग करनेवाली लडकियों को, "प्लीज एक्यक्युज मी" में तथाकथीत भद्र संस्कृति के लोगों के खोखलेपन को बेनकाबू किया है।

सच्चे अर्थो में नागार्जुन पीडीत शोषित जन के पक्षधर है। कवि उनके संघर्ष को वाणी देता है और उसे बराबर आशा है कि अच्छे दिन लौंट आयेंगे जहाँ किसी का शोषण नहीं होगा और समाज में सभी को उनका हक मिलेगा।

आर्थिक स्थितियों का यथार्थ :-

शोषित और श्रमिक जनता के प्रति सहानुभूति का जो भाव नागार्जुन के यहाँ देखने को मिलता है, उसके मुल में इन वर्गो का आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होना है। आर्थिक वैषम्य इनकी कवितांओ में व्यंग्य को पेना बनता चला गया है। ये आर्थिक अन्तर्विरोधी इस देश की वस्तुस्थिति है। जो गरीब है वह और अधिक गरीब होता चला गया है ।-

मैं दरिद्र हूँ। पुश्त पुश्त की यह दरिद्रता।
कटहल के छिलके जैसी जीभ से मेरा लहू
चाटती आई है। मै न अकेला। मुझ जैसे तो
लाख लाख है कोटि कोटि है।"[36]

इस गरीबी, इस बेकारी से नागार्जुन बुरी तरह ग्रस्त है। वे चाहते है सबको रोजगार के समान अवसर मिले सबकी गरीबी दूर हो और इसका समाधान वे औद्योगिकरण में खोजते है।

कवि उस पूंजीवादी व्यवस्था के एकदम खिलाफ है। जिसमें सिर्फ व्यक्तीगत सुख-दु:ख का ध्यान रखा जाता है। गरीब और अधिक गरीब होता चला जाता है। यह सब आर्थिक शोषण के कारण ही होता है क्योंकि पूंजीपति वर्ग सबको रौन्धकर सिर्फ अपनी स्वार्थ सिध्दी चाहता है और समाज का शोषण कर उसे एकदम असहाय्य एवं भूखा बना देना चाहता है। -

"अधिकाधिक योग क्षेम
अधिकाधिक शुभ लाभ
अधिकाधिक चेतना
कर लू संचित लघुतम परिधि में।
असीम रहे व्यक्तिगत हर्ष उत्कर्ष
अकेले ही सकुशल जी लूँ सौ वर्ष।
यह कैसा होगा।"[37]

नागार्जुन मानवीय मुक्ति चाहते है और यह पूंजीवादी व्यवस्था मे कतई संभव नहीं। हमें "जनलक्ष्मी" की ओर भी ध्यान देना ही होगा। इस प्रकार नागार्जुन ने आर्थिक स्थितियों की वस्तूस्थिती का लेखा-जोखा अपनी कवितांओ मे प्रस्तुत किया है। अपनी सुख सुविधा के लिए विदेशों से कर्ज लेकर देश की आर्थिक दृष्टि से कमर तोडते चलने की मनोवृत्ति को भी स्पष्ट किया है।

3. **राष्ट्रीयता के भाव की कविताएँ :-**

"जनसामान्य की दिन-प्रतिदिन बिगडती जा रही हालत से नागार्जुन पुरी तरह वाकिफ और चिंतित है। प्रगति की यात्रा में लगातार अपने देश का पिछडते जाना नागार्जुन के भीतर रह-रहकर टिसता है। भ्रष्ट नेताओं का विरोध देख कुछ लोग नागार्जुन को विद्रोही कहते है। लेकिन वस्तूत: सच्चा कवि स्वभाव से विद्रोही होता है। वह चली आती हुई गलत परम्पराओं के आगे सिर नहीं

झुकाता। वह अपने देश की जनता को गुलामी, दासता और शोषण की ठोकरे खाता देख चुप नहीं रह जाता। वरन अपने देश की जनता को जागृत करता है। अपनी गिरी हुई स्थिति से उठ खडे होने की प्रेरणा देता है। शोषको और अत्याचारियों से संघर्ष के लिए वह जनता को उकसाता है। निराशा नहीं, किंतु आशा और समय की पुकार के स्वर वह साहित्य द्वारा जनता में भरता है।"[38] जिस गांव की मिट्टी में नागार्जुन पालित पोषित हुए उससे लेकर समूचे देश के कण-कण से उनका गहरा लगाव है।-

खेत हमारे भूमि हमारी सारा देश हमारा है
इसीलिए तो हमको इसका चप्पा-चप्पा प्यारा है।"[39]

राष्ट्रीय नेताओं के प्रति श्रध्दा भावना और देश के कलाकारों साहित्यकारों के प्रति विनयावत होने और उन्हें वे सम्मान देने का भाव भी राष्ट्रीयता भावना का ही सुचक है। गांधीवादी विचारधारा को अस्वीकार करते हुए और नेहरू पर व्यंग्य प्रहार करते हुए भी वे उनकी मृत्यु पर आँसू बहाते हुए दिखाई देते है।

"युगधारा की शपथ" कविता गांधीजी के राष्ट्रीय व्यक्तित्व के प्रति आस्था की सूचक है -

कोटी कोटी अनगिनत स्वप्नो को।
हम रूप और आकृति देंगे।
हम कोटी कोटी।
तेरे औरस संतान पिता।"[40]

"लाल बहादूर" कविता में लालबहादूर शास्त्री के तपः पूत राष्ट्र समर्पित व्यक्तित्त्व के प्रति आसक्ति, राष्ट्र के व्यक्तित्त्व पर दृढनिष्ठा की सूचक है। "भारती सिर पीटती है" में निराला चौधरी राजकमल और शैलेन्द्र जैसे रचनाकारो

जिन्होंने देश की आत्मा को वाणी दी है। उनके प्रति श्रध्दा भाव अर्पित किया है। "भारत-माता" कविता में कवि के प्रति असीम राग का पता सहज ही लगता है। भारत के नक जल हरियाली आदि के प्रति अपना प्यार प्रकट करने के बाद कवि कहता है -

"दोषी तुम्हारी वसुन्धरा का बिल्ता बित्ता रत्नाकर है।"[41]

नागार्जुन की राष्ट्रीयता का पूरा-पूरा प्रमाण उनके द्वारा सन 62 में चिनी आक्रमण और 65 और 71 के पाकिस्तानी आक्रमणो के दौरान लिखी गई कवितांओ में मिल जाता है। 62 में चीनद्वारा भारत पर आक्रमण किये जाने के बाद अब तक के कम्युनिष्ट नागार्जुन का कम्युनिष्टो से मोह भंग हुआ और वे "माओ" की मर जाने की गुहार लगाने लगे। एक सच्चे देशभक्त के यहाँ राष्ट्रीयता एवं देशहित प्राथमिक होता है -

"आज तो मैं दुश्मन हूँ तुम्हारा
पुत्र हूँ भारत माता का
और कुछ नहीं हिंदुस्तानी हूँ महज
प्राणो से भी प्यारे है मुझे अपने लोग
प्राणो से भी प्यारी है मुझे अपनी भूमि।"[42]

यहीतेवर 65 और 71 के पाकिस्तानी आक्रमण पर भी प्रस्तुत हुआ है। "एकशन में आ गये लाख-लाख जवान" कविता भारतीय सैनिकों को सीमांओ की हरकतों का मुँह तोड जबाब देने की प्रेरणा देती है। देश विभाजन के साथ ही हिंदू मुस्लिम भाई चारे का गांधीजी का स्वप्न चकनाचूर हो गया और बटवारे के दौरान हुए दंगो में इसका घृणित रूप उभरकर सामने आया। बाहरी शक्तियों की सहाय्यता पर पाकिस्तान ने भारत पर बुरी नजर डाली तो उसे किस तरह दुम-दबाकर भागना पडा। कवि इसका चित्रण करता है -

"वे हिटलर के नाती पोते
बाहरी शक्ति जिसका संबल
देखो पिटकर भागे कैसे
वे पाकिस्तानी दानव दल।"[43]

नागार्जुन ने केवल राष्ट्रीय हित की बात करते है बल्कि वे अर्न्तराष्ट्रीय सर्वहारा के कल्याण की भी बात करते है। लेकिन जहाँ कही देश पर आँच आयी, वे उसके हित में कुद पडे। इसी संदर्भ में उन्होंने "माओ" को अपशब्द तक भी कहे भारत-पाक युध्द के दौरान जवानों को प्रेरणा देने के लिए गीत और कविता रची। उनमें देश रक्षा का भाव प्रमुख है।

4. **व्यंग्य कविताएँ :-**

हिन्दी मे श्रेष्ठ व्यंग्य की स्वस्थ परंपरा स्थापित करनेवालों में नागार्जुन का स्थान प्रथम है। कोई भी ऐसा वर्ग नही है, जो उनकी पैनी नजर से बच सकी हो। उन्होंने आज की भ्रष्ट राजनीति और राजनेताओं पर तो व्यंग्य कविताएँ लिखी ही है। सामाजिक, धार्मिक रूढियों तथा आर्थिक विसंगताओं पर भी व्यंग्य रचनाएँ उन्होंने लिखी है। नागाजुन की सबसे मजबूत पकड व्यंग्य पर है। नागार्जुन के काव्य का बहुत बडा हिस्सा राजनीतिक कवितांओं से भरा पडा है। उनकी प्रारंभिक कविताओं मे नेहरू युग, गांधी युग की पहचान मिलती है तो इधर की कविताओं में इंदिरा युग, जनता शासनकाल, लोकतांत्रिक, उथल-पुथल, राजीनतिक हिंसा, भ्रष्टाचार, अंध सत्तावाद तथा राजनीति की जनविरोधी नीतीयों का हालचाल अंकित है। "खिचडी विप्लव देख हमने" संकलन गत दस-पन्द्रह वर्षो की राजनीतिक कारगुजारियों का ज्वलंत दस्तावेज है। इसमें जयप्रकाश, मोरारजी, चरणसिंग, देवरस ओर संजय गांधी जैसे राजकर्मियों के अलावा इंदिरा गांधी पर ढेरो कविताएँ है। जो कवि के गुस्से का केंद्रीय निशान बन सकी है। इन कविताओं को पढते हुए लगता है कि भारतीय राजनीति में पतन और अमानवीयता का चरम उदाहरण

हमारा नेता वर्ग रहा है। उनकी "खिचडी विप्लव" "क्रांती सुगबुगाई" है। "अगले पचास वर्ष" जैसे कविताओं में अनेक रूपों में क्रांति का कीड़ा बिल-बिला रहा है -

"उपर उपर मूक क्रांति, विचार क्रांति, संपूर्ण क्रांति
कंचन क्रांति, मंचन क्रांति, वचन क्रांति, किंचन क्रांति।
फाल्गु सी प्रवाहित रहेगी, भीतर-भीतर तरल भ्रांति।"[44]

वोटों की राजनीति पर व्यंग्य करते हुए कॉंग्रेसी नेताओं की टिकिट प्राप्ती को घुडदौड का दृश्य देखिए -

"श्वेत श्याम रतनार अंखिया के
सिण्डीकेटी-प्रभुओं की पगधूर भार के
दिल्ली से लौटे है कल टिकीट मार के
खिले है दांत दाने ज्यो अनार के
आप दिन बहार के।"[45]

लिखते है कि, "कोई रीतिवादी नायिका-प्रौढ मध्या, अधीरा आदि अपने प्रियतम को देखकर इतना प्रसन्न न हुई होगी, जितना टिकिट पाकर यह कॉंग्रेसी नेता।"[46] तेरह साल ही नहीं आजादी के पैंतीस साल बाद भी स्थितियों ज्यां की त्यो है। आज भी नेता लोग गांधी का नाम लेकर वोट बटोरने मे लगे हुए है -

"बेच बेचकर गांधीजी का नाम
बटोरे वोट
बैंक बैलेन्स बढाओं
राजघाट पर बापू की वेदी के आगे आसु बहाओ।"[47]

डॉ·शरेगंज गर्ग के शब्दो में कहे तो, "ऊबड खाबड किन्तू चट्टान की सी मजबूती रखनेवाली, क्षिप्र और हथौडी सी चोट करनेवाले, बेतकल्लुफ , फक्कड और निर्भिक

व्यंग्य रचनाएँ लिखने के कारण नागार्जुन का स्थान अन्य व्यंग्यकारी की तुलना में हमेशा अलग रहेगा।"48

निष्कर्षता :-

हम कह सकते है नागार्जुन के काव्य में सामाजिक विषमता के स्थानपर एक ऐसे समाज की रचना पर बल दिया है जहाँ सभी अपना पूरा अधिकार पा सके और शोषणकारी ताकतों का खात्मा हो। उपर दिये गये विभाजन के साथ साथ नागार्जुनजी ने श्रध्दांजली एवं संस्मरणात्मक कविताएँ भी लिखी जो हिन्दी कविता में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। नागार्जुन की कविता बहुरंगी भाव-छवियों की कविता है। कवि ने अपनी संवेदना को किन्ही बँधी-बँधाई लीकों में अभिव्यक्ति न देकर, उसे जीवन की समग्रता का व्यापक संदर्भ प्रदान किया है। वह मुक्त प्रकृति की कविता है। उनकी कविता जीवन की सँकरी और प्रशस्त, समस्त गलियों और राजपंथों में स्वेच्छापूर्वक विचरण करती है। इसी क्रम में उसकी और उसे जीनेवाले मनुष्य की, वैयक्तिक और सामाजिक सभी प्रकार की आकृतियों को पहचानते हुए चलती है। नागार्जुन की काव्य-कृतियाँ उनके व्यक्तितत्त्व के भाँति ही बेजोड है।

13165
A

कविवर नागार्जुनजी का समग्र साहित्य एवं पुरस्कार :-

अ· **काव्य** :- 1· इस गुब्बारे की छाया में, 2· आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, 3· ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या!, 4· रत्नगर्भ, 5· पुरानी जूतियों का कोरस, 6· हजार बाहों वाली, 7· खिचडी - विल्पव देखा हमने, 8· सतरंगे पंखोवाली, 9· युगधारा, 10· प्यासी पथराई आँखे, 11· भस्मांकुर, 12· खून और शोले, 13· चना जोर गरम, 14· शपथ, 15· प्रेत का गयान, 16· तुमने कहा था, 17· नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएँ (तीन खंड), 18· भूमिजा मैथिली काव्यसंग्रह : चित्रा और पत्रहीन नग्न गाछ।

आ· **उपन्यास** :- 1· रतिनाथ की चाची, 2· नई पौध, 3· बाबा बटेसरनाथ, 4· वरूण के बेटे, 5· जमनिया का बाबा, 6· कुंभीपाक, 7· उग्रतारा, 8· दुखमोचन, 9· हीरक जयंती, 10· गरीबदास

मैथिली उपन्यास : 1· नव तुरिया, 2· पारो, 4· बलचमना।

इ· **कहानी संग्रह** :- 1· आसमान में चंदा तेरे।

2· विद्यापति की कहानियाँ।

ई· **निबंध संग्रह** :- 1· बस भोले नाथ।

2· अन्नहीनम् क्रियाहीनम्।

उ· **अनुवाद** :- 1· गीतगोविंद, 2· विद्यापति के गीत, 3· मेघूदत।

ऊ· **संस्कृत रचनाएँ** :- 1· देश देशकम्, 2· कृषक दशकम्

3· श्रमिक दशकम्।

ए· **आलोचना** :- "एक व्यक्ति का युग" शीर्षक से महाकवि निराला का मूल्यांकन।

पुरस्कार एवं सम्मान :-

1· नागार्जुनजी को सन् 1969 के लिए मैथिली का साहित्य अकादमी पुरस्कार "पत्रहीन नग्न गाछ" नामक काव्य संग्रह पर मिला।

2· सन् 1981 में उत्तर प्रदेश शासन की ओर से दीर्घकालीन साहित्य रचना और हिंदी सेवा के लिए विशिष्ट सम्मान दिया गया।

3· सन् 1986 में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा ही साहित्य द्वारा ही साहित्य का सर्वोच्य सम्मान "भारत-भारती" से सम्मानित किया गया।

4· 1986 में मध्य प्रदेश शासन द्वारा हिंदी कविता का सर्वोच्य सम्मान "मैथिलीशरण गुप्त" सम्मान दिया गया। इसके अतिरिक्त कई अन्य अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से नागार्जुनजी को विभूषित किया है।

<u>संदर्भ सूची</u>

1·	भूमिजा - रचनाकार नागार्जुन -	सं·सोमदेव / शोभकांत भूमिका से उद्धृत
2·	आलोचना 56	कृष्णा सोबती को दिए साक्षात्कार से। पृ·230
3·	अन्नहीनम् क्रियाहीवम् -	नागार्जुन प्र·सं·1983 (वाणी), पृ·126
4·	साहित्य और सामाजिक संदर्भ -	डॉ·शिवकुमार मिश्र पृ·122
5·	वही -	पृ·122
6·	नागार्जुन जीवन और साहित्य-	डॉ·प्रकाशचंद्र भट्ट प्र ·सं·1974 पृ·25
7·	वही -	पृ·26
8·	उपन्सासकार नागार्जुन -	बाबूराव गुप्त प्र·सं·1985 पृ·121
9·	नागार्जुन -	सं·सुरेशचंद्र त्यागी प्र·सं·1985 पृ·10
10·	वही -	पृ·11
11·	आलोचना 56 -	कृष्णा सोबती को दिए साक्षात्कार से। पृ·235
12·	आलोचना (56-57) में -	कृष्णा सोबती को दिए साक्षात्कार से। पृ·,23
13·	आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि नागार्जुन -	सं·डॉ·प्रभाकर माचवे पृ·4-5

14·	बाबा नागार्जुन	-	सं·नरेंद्र कोहली प्र·सं·1987 पृ·431
15·	नागार्जुन का रचना संसार	-	विजय बहादूर सिंह प्र·सं·1980 पृ·17
16·	आलोचना अंक 56-57 -		केदारनाथसिंह पृ·17
17·	वही -		पृ·15
18·	आलोचना अंक 56-57	-	अरूण कमल पृ·27
19·	रूपांबरा	-	पृ·278-79
20·	सतरंगे पंखोवाली -		पृ·31
21·	वही -		पृ·31
22·	तुमने कहा था -		पृ·87
23·	तालाब की मछलियाँ -		पृ·17
24·	वही -		पृ·27
25·	वही -		पृ·98
26·	वही -		पृ·99
27·	वही -		पृ·15
28·	"लहर" नवंबर 70 -		डॉ·रामविलास शर्मा पृ·43
29·	नयी कविता नये कवि -		श्री·मानव पृ·65
30·	जनशक्ति जनवरी" 60 (पहला)		
31·	तालाब की मछलियाँ -		पृ·102

32· तालाब की मछलियाँ - पृ·49

33· वही - पृ·114

34· युगधारा - पृ·119

35· वही - पृ·119

36· तालाब की मछलियाँ पृ·57

37· सतरंग पंखोवाली - पृ·19

38· हंस" - अप्रेल - 1948

39· प्यासी पथराई आंखे - पृ·13

40· तालाब की मछलियाँ - पृ·32

41· नागार्जुन जीवन और साहित्य- डॉ·प्रकाशचंद भट्ट पृ·87

42· तालाब की मछलियाँ - पृ·88

43· नागार्जुन जीवन और साहित्य- डॉ·प्रकाशचंद्र भट्ट पृ·91

44· खिचडी - विल्पव देखा हमने - पृ·22

45· वही - पृ·25

46· लहर" नवंबर 1970 - डॉ·रामविलास शर्मा पृ·45

47· युगधारा - पृ·104

48· स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य - डॉ·शेरजंग गर्ग